International Journal of Applied Research 2019; 5(8): 79-82

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(8): 79-82
www.allresearchjournal.com
Received: 16-06-2019
Accepted: 18-07-2019

डॉ० श्वेता श्री
गेस्ट फैकल्टी, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग ल० ना० मि० वि० वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ० श्वेता श्री
गेस्ट फैकल्टी, स्नातकोत्तर गृह विज्ञान विभाग ल० ना० मि० वि० वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

परिवार को सशक्त बनाने में गृह विज्ञान की भूमिका

डॉ० श्वेता श्री

'गृह विज्ञान का दर्शन यथार्थ में गृह और परिवार' का ही दर्शन है । पारिवारिक आवश्यकताओं ने ही मानव को परिवार जैसी आधारीय सामाजिक संस्था को जन्म देने के लिए बाध्य किया। इसी जगह उसे स्नेह सहानुभूति, विनम्रता, त्याग एवं साहस आदि सर्वोत्तम मानवीय गुणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। परिवार में ही बच्चा मनुष्य के रूप में विकसित होता है | यहीं पर वह समुदाय के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करना सीखता है। परिवार के माध्यम से ही समाज के सांस्कृतिक मूल्यों का प्रसारण होता है |

आज की पारिवारिक व्यवस्था प्राचीन व्यवस्था से भिन्न है | संयुक्त परिवार प्रणाली का क्रमश: विघटन हो रहा है| पारिवारिक जीवन निरन्तर परिवर्तित हो रहां है। जीवन के स्तर तंथा समाज की धारणा दिन-प्रतिदिन बदल रही है| स्त्रियाँ घर के बाहर कार्य क्षेत्र में पर्दापण कर रही हैं। विकसित अर्थव्यवस्था तथा औद्योगीकरण से परिवार भी अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। यदि लड़के तथा लड़कियों की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल बनाना है तो उन्हें आज की सामाजिक आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा देनी होगी ।

गृह विज्ञान, शिक्षण के अन्तर्गत आधारभूत विज्ञानों, कलाओं तथा भोजन एवं पोषण, वस्त्र, गृह-व्यवस्था, शिशु-पालन, स्वास्थ्य-विज्ञान, गृह परिचर्या तथा मानवीय सम्बन्ध जैसे व्यावहारिक विज्ञानों का समावेश होता है। इसका क्षेत्र इतना अधिक व्यापक है कि सम्पूर्ण जीवन इसके क्षेत्रान्तर्गत आ जाता है |

गृह व्यवस्था की कला भारतीयों के लिए नवीन नहीं है। वे शताब्दियों से माताओं ओर पत्नियों के रूप में विश्व के समक्ष गृह की पवित्र, आदर्श एवं समाज के स्थायी अंग के रूप में प्रस्तुत करती रही है । गृह -रचना की इस कला की शिक्षा वे घरों में ही अपने से बड़ों से प्राप्त करती रही थी, परन्तु आज की परिस्थितियाँ बिल्कुल ही भिन्न है|

वर्तमान भारत में अन्य देशों के समान आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण स्त्रियों को घर के बाहर दूसरे क्षेत्रों में आने के लिए निरन्तर पुकार आ रही है। अतः नारी के कार्यों का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है | ऐसी दशा में जबकि स्त्री घर से बाहर काम करती है। गृह-कार्य एक समस्या बन जाता है, और कभी-कभी दूभर भी प्रतीत होने लगता है। बाहर कार्य करने वाली स्त्रियों के लिए गृह कार्य समस्यात्मक रूप धारण न कर लें, इसके निवारणार्थ तथा उसको सरल एवं सुगम बनाने के लिए यह आवश्यक है कि छात्राओं को गृह विज्ञान की शिक्षा व्यावहारिक, वैज्ञानिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से दी जाय |

इस विषय को पाठ्यक्रम में महत्त्वपूर्ण स्थान. दिया जाने लगा है। पूर्व प्राथमिक विद्यालय में छोटे-छोटे बच्चों को खाने, पहनने धोने सफाई करने साथ-साथ खेलने आदि क्रियाओं के माध्यम से जीने की कला की शिक्षा देकर गृह-विज्ञान को समझने की क्षमता विकसित की जाती है। प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य विज्ञान एवं स्वास्थ्य विज्ञान तथा नागरिक शास्त्र के अंग के रूप में गृह विज्ञान अध्यापित किया जाता है। 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' की सिफारिशों के परिणामस्वरूप माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान शिक्षण को महत्व दिया जाने लगा है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर इस विषय को पाठ्यक्रम में स्वतन्त्र विषय के रूप में अपना लिया गया है|

इस विषय के अध्यापन से परिवार में आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यावहारिक रूप से देखने का मिलने लगा है। जीवन को सुखमय एवं उत्तम बनाने के लिए भौतिक विज्ञान का प्रयोग किया जाने लगा है |

गृह विज्ञान की शिक्षा द्वारा व्यक्ति को मितव्ययता की शिक्षा मिलती है । पोषण- विज्ञान के ज्ञान के अभाव में जिन खाद्य-वस्तुओं के कुछ भाग को अनुपयोगी एवं व्यर्थ समझा जाता था, अब उनका अधिकतम उपयोग करके धन की बचत की जा सकती है | सब्जी एवं फलों को छीलकर, उनके छिलके, फेंकना, आटे की चोकर, फेंकना, सब्जी तथा चावल के पानी को फेंकना, आदि अपव्ययी क्रियाओं को कोई गृह विज्ञान का छात्र-छात्रायें सहन नहीं कर सकता | वे इनका उपयोग पोषक आहार तैयार करने में करती है|

स्वस्थ, शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। अगर हमारे बच्चे एवं युवा कुपोषित रहेंगे तो दुनिया की अपेक्षाओं पर कैसे खरे उतरेंगे । आज हर परिवार अपनी बचत का एक बड़ा हिस्सा बीमारियों के इलाज पर खर्च कर देता है । जिससे होने वाले मानसिक श्रम, शारीरिक श्रम और परिवार को होने वाली व्यथा का मूल्यांकन ही नहीं किया जा सकता | लिहाजा समाज को स्वस्थ रखने के लिए समाज में शामिल सभी बच्चों, महिलाओं, पुरुषों को भी स्वस्थ रखना होगा। इसके लिए परिवार से लेकर समाज तक सभी को जागना होगा। भारत जैसे देश के लिए यह मसला किसी विडंबना से कम नहीं है । एक तरफ तो हम तरक्की की सीढ़ियाँ तेजी से चढ़ते जा रहे हैं लेकिन, अपने मानव संसाधनों को स्वास्थ्य सुविधाएँ मुहैया कराने के मामले में दुनिया के कई देशों में पीछे है। इस नाकामी की हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है | आज देश बेहद संवेदनशील मुहाने पर खड़ा है | इसकी अधिकांश आबादी अपेक्षाकृत युवा है | प्राचीन सभ्यता वाले इस युवा देश की कार्यशील आबादी हर साल करोड़ की दर से बढ़ रही है । अगले एक दशक में भारत के पास दुनिया की सर्वाधिक क्षमता वाली कार्यशक्ति होगी | ऐसे में अपने मानव संसाधनों को स्वस्थ रखकर और उन्हें स्वास्थ्य की जानकारी और सुविधाएँ मुहैया कराकर आने वाले दिनों में भारत अपने नाम का विश्व में डंका बजा सकता है| मानव संसाधनों के लिहाज से तमाम

देश टकटकी लगाए हमारी तरफ देख रहे हैं । निचले दर्जे से लेकर अव्वल दर्जे के रोजगार देने के लिए उम्मीद लगाए बैठे हैं। शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की सोच भी स्वस्थ होती है | ऐसा देखा गया है कि ऐसे लोग न केवल सकारात्मक सोचते हैं, बल्कि विकास युक्त और अपराध जैसी बात भी इनके जेहन में कम ही आती है| यह प्रवृत्ति समाज के लिए किसी वरदान से कम नहीं है | जब समाज में बुराई और बुरे लोग अल्पसंख्यक होंगे तो उन्हें आसानी से हतोत्साहित किया जा सकेगा | हर साल देश का प्रत्येक नागरिक अपनी बचत का बहुत बड़ा हिस्सा बीमारियों के इलाज में खर्च कर देता है। लिहाजा निरोग रहने पर उसकी यह बचत उसके जीवन स्तर को बढ़ाने में सहायक साबित हो सकती है।

हमारे देश में शिशु मृत्यु की दर अधिक होने का एक प्रमुख कारण निर्धनता और अज्ञानता है | जानकारी का अभाव होने के कारण गर्भवती, स्त्री को गर्भावस्था में पर्याप्त तथा पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता | इस कारण डरा गर्भस्थ शिशु का उचित विकास नहीं हो पाता तथा जन्म के समय वह बहुत कमजोर होता है जिससे असमय ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। गरीबी और जानकारी के अभाव के कारणों का प्रतिकूल प्रभाव गर्भवती के स्वास्थ्य पर पड़ता है और माता एवं बच्चे दोनों के ही जीवन को खतरा रहता है | अनेक शिशुओं की मृत्यु तो प्रसव के समय ही हो जाती है। आधुनिक ज्ञान और शिक्षा के अभाव में बहुत से समाजों में अन्धविश्वासों तथा रूढ़ियों का बोलबाला है | ये लोग प्रत्येक घटना-दुर्घटना के लिए ईश्वर या भाग्य को जिम्मेदार मानते हैं। इस प्रकार के अज्ञानतापूर्ण दृष्टिकोण ने भारतवर्ष में शिशु-मृत्यु दर की वृद्धि में विशेष योगदान दिया है| रूढ़िवादिता के ही कारण भारतीय समाज में बाल-विवाह का प्रचलन रहा है | इस प्रचलन के कारण कम आयु की लड़कियों का विवाह हो जाता है | और शीघ्र ही गर्भवती हो जाती है | इस स्थिति में अनेक बार तो प्रसव के समय ही माँ एवं शिशु दोनों की मृत्यु हो जाती है | इसके अलावा उचित देखभाल न हो पाना, पर्याप्त एवं सन्तुलित आहार न मिलने के कारण शिशु कमजोर हो जाते हैं एवं उनके शरीर का समुचित विकास नहीं हो पाता है और विभिन्न रोगों से लड़ने की क्षमता का भी विकास नहीं हो पाता | ऐसे में ये अभाव ग्रस्त शिशु किसी भी भयानक रोग से ग्रस्त हो जाते हैं तथा जल्द ही उसकी मृत्यु हो जाती है ।

गृहविज्ञान छात्रों को समस्त परिवार सम्बन्धी कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के अवसर प्रदान करता है | इसके माध्यम से छात्रों को स्वास्थ्य के नियमों से अवगत कराया जाता है तथा गृह कार्य करने की उन कुशल विधियों का बोध कराया जाता है जो उनके तथा परिजनों के स्वास्थ्य का उत्तम रखने में तथा सुव्यवस्थित परिवार निर्माण में सहायक होती है । कढ़ाई व सिलाई के शिक्षण द्वारा अपने बच्चों की आवश्यकता के कपड़े स्वयं सीकर कपड़े का सदुपयोग तथा धन की बचत कर सकती है | धुलाई कला सीखकर दैनिक प्रयोग में आनेवाले कपड़ों को धो सकती है | गृह विज्ञान विषय की विभिन्न शाखाओं का गहन अध्ययन कर अपनी रूची के अनुकूल व्यवसाय अपना सकती है| वे अवकाश के समय में रूचि के अनुकूल कार्य कर सकते हैं तथा परिवार के अन्य सदस्यों को भी इन कार्यों को खाली समय में करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

अतः पारिवारिक पर्यावरण को सशक्त बनाने में गृह विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच उत्तम पारस्परिक संबंध स्थापित करने में सहायता देता है।

सन्दर्भ

1. गृह विज्ञानं शिक्षण, जी पी० शेरी, डी पी० सरन, डी० एन श्रीवास्तव, अग्रवाल पब्लिकेशन, 2017
2. मालविका कार्लेकर (1994), “बुमंस नेचर एंड एक्सेस टू एजुकेशन” सी० मुखोपाध्याय एवं एस० सेमोर, वुमन एजुकेशन एंड कैमिली स्ट्रक्चर इन इंडिया, बोल्डर वेस्टव्यू यू एस ए।
3. रिपोर्ट ऑफ़ स्कूल हेल्थ मिटी पार्ट - 1 मिनिस्ट्री ऑफ़ हेल्थ गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया, 1960